Volume: 4 Issue: 1 Pages: 21-23

पृथ्वी सूक्त में पर्यावरण के संदर्भ में

*[1] राष्ट्रीयता कुमारी

*[1] शोधार्थी - राष्ट्रीयता कुमारी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत। गाइड - डॉ. सीमा चौधरी

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 15/Dec/2024
Accepted: 10/Jan/2025

***Corresponding Author**
राष्ट्रीयता कुमारी
शोधार्थी - राष्ट्रीयता कुमारी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत। गाइड - डॉ. सीमा चौधरी

सारांश:
मानव जाति का आदि ग्रंथ वेद हैं। वैदिक ग्रंथों में पृथ्वी की माता के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हैं। अथर्ववेद के 12 वे कांड का प्रथम सूक्त पृथ्वी सूक्त है। अथर्वण ऋषि ने कुल 63 मन्त्रों में मातृरूपिणी भूमि की समय पार्थिव पदार्थों की जननी तथा पोषिका के रूप में महिमा समुद्घोषित की है. तथा प्रजा की समस्त बुराइयों, क्लेशो तथा अनर्थों से बचाने व सुख संपति की वृष्टि के लिए प्रार्थना की है। पृथ्वी सूक्त की भूमि सूक्त व मातृ सूक्त भी कहा जाता है। पृथ्वी सूक्त में पर्यावरण से संबंधित विशिष्ट ज्ञान का समावेश किया गया है। पृथ्वी सूक्त में प्रकृति को विशिष्ट अवधी भूत तत्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पृथ्वी सूक्त में पर्यावरण के जीव जगत के चर अचर संबंधों का है अद्वितीय ज्ञान मुखरित किया गया है। पृथ्वी सूक्त के मंत्रों की वैज्ञानिकता वर्तमान समय में पर्यावरण से ज्यादा प्रासंगिक प्रतीत होती है। पृथ्वी के पर्यावरण, जीव जगत, चर अचर के सम्बन्धों की जो वैज्ञानिकता इन मंत्रों से मुखरित हुई हैं। पृथ्वी सूक्त राष्ट्रीय अवधारणा तथा वसुदेव कुटुंबकम की भावना को विकसित करने के साथ- साथ पर्यावरण के प्रति स्नेहशील संबंध स्थापित करता है।

मुख्य शब्द: ऋग्वेद, अथर्ववेद, सूक्त, प्रकृति, पर्यावरण, ज्ञान, भौतिक, भूमि, माता, ऋषि आदि।

प्रस्तावना:

पर्यावरण की वास्तविक समर सता को पृथ्वी सूक्त के मित्रों द्वारा स्थापित किया जा सकता है। पृथ्वी व पर्यावरण सामान्य अर्थों में एक दूसरे के पूरक हैं। पृथ्वी सूक्त में प्रकृति पर्यावरण जन्य जीव जगत आदि सभी के मध्य अनुपम संबंध स्थापित किया गया है। पृथ्वी सूक्त के मित्रों के माध्यम से अर्थवा ऋषि ने पृथ्वी के आदि दैविक और आदि भौतिक दोनों रूपों का स्तवन किया है। माता की इस महामहिमा को हृदयंगम करके उससे उत्तम वर की प्रार्थना की है। पृथ्वी सूक्त में पृथ्वी और पर्यावरण का एक संबंध दृष्टिगोचर किया गया है। यह सूक्त देशभक्ति तथा विश्वबंधुत्व की प्रेरणा मधुर विलास है जो अथर्ववेदीय युग की महनीय राष्ट्रीयता का सन्देशवाहक बना आज भी हमारे लिए उत्साह तथा उल्लास का सद्यःप्रेरक है। राष्ट्रीय अवधारणा तथा वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को विकसित, पोषित एवम् फलित करने के लिए यह सूक्त अत्यंत उपयोगी हैं। इस सूक्त में भूमि की विशेषताओं एवम् उसके प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराया गया है। इसमें भूमि अथवा मातृभूमि के प्रति कर्तव्यों का बोध कराया गया है। इस सूक्त में पृथ्वी के स्वरूप एवं उसकी उपयोगिता, मातृभूमि के प्रति प्रगाढ़ भक्ति पर विशद् विवेचन किया गया है। वन के कल्याणकारी होने का उल्लेख अथर्ववेद में प्राप्त होता है।
'अरण्यं ते पृथ्वी स्योनमस्तु।'

पर्यावरण का अर्थ

पर्यावरण शब्द परि+आवरण दो शब्दो से मिलकर बना है। जहां परि का अर्थ है चारों और तथा आवरण का अर्थ है आच्छादित, ढका हुआ या घिरा हुआ। पर्यावरण का अभिप्राय उस हवा से हैं जिससे हम सांस लेते है. उस पानी से है जिसे हम पीते हैं। इसका अभिप्राय नदियों, मैदानी, झीलों और जंगलों से हैं तथा उन असंख्य जीवो से है. विश्व की भूमि वायु तथा पानी में वास करते हैं। विश्व का प्रत्येक प्राणी चारों और से वातावरण पर आश्रित रहता है। पर्यावरण की इस परिधि में वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी तथा समस्त वनस्पति, पशु पक्षी, दिशाएं, पर्वत, मेघ, मैदान आदि समाहित हैं। इसका अभिप्राय संस्कृति, परम्पराओं एवम् प्रथाओं तथा मनुष्य जाति की उस विविधता से है जो जनजातियों से लेकर अज्ञात प्राय समुदायों में उनकी विलक्षण शैलियों के रूप में विद्यमान हैं। ऋग्वेद के एक सूत्र के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का महत्व बताया गया है-

यत्किं च दृश्यते तत्सर्व जगदेकं देवेश्वरैः।
एत्स्माद्विरजं विश्वं परितः पश्यते नरः।।

पृथिवी का अर्थ

पृथ्वी का अर्थ है विस्तृत आकार वाली। ऋग्वेद में उल्लेख आया है कि देवराज इंद्र ने पृथ्वी का प्रथन किया, 'पप्रथ' वहां इस शब्द की व्युत्पति का संकेत हैं। प्रथ का अर्थ फैलना, विस्तार होना है।

सधारयत् पृथिवी पप्रथ्च्च सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार।

'तैत्तिरीय संहिता' में भी पृथिवी के प्रथ शब्द से उत्पति के विषय में स्पष्ट रूप से कहा गया है- साप्रथत् सा पृथिव्यभवतत्पृथिव्यै पृथिवित्वम्।
'ऋग्वेद' के ऋषि ने भी पृथिवी की एक उदारमना माता के रूप में ही स्वीकार किया है, जो प्रत्येक प्राणी की जन्मदात्री, पलयित्री तथा अंततः उसे अपनी कोमल गोद समेट लेने वाली है– उप सर्प मातरं भूमिमेतामुरुव्यचसं पृथिवी सुशेवाम्।
यह पर्वतों के भार को धारण करने वाली, वन्य औषधियों की धर्त्रि,भूमि को उर्वरता प्रदान करने वाली तथा जल बरसाने वाली है

बलित्या पर्वतानां खिद्र बिभर्षि पृथिवि।
प्रयाभूमिं प्रवत्वति महा जिनोषि महिनि ।।

पृथिवी सुक्त और पर्यावरण में संबंध

पृथिवी सूक्त और पर्यावरण में एक गहरा संबंध है। पृथिवी सूक्त में पृथिवी के प्रति मातृभाव दर्शाया है माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः अर्थात् भूमि मेरी माता है, मैं उनका पुत्र हूं। शास्त्रों के अनुसार सृष्टि पांच महाभूतों के समूह से उत्पन्न मानी गई हैं। ये तत्व है-पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु। जो कि पर्यावरण के भी अति महत्वपूर्ण तत्व हैं। इन पांच महाभूतो में से यदि किसी एक में भी किसी प्रकार की विकृति होती हैं, तो पर्यावरण का हास स्वतः ही होने लगता है। पर्यावरण में इन पांच तत्वों में घनिष्ठ संबंध हैं. एक में विकृति आने पर अन्य स्वतः ही प्रभावित होने लगता है। हमारे पर्यावरण में छः ऋतुएं (ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर, वसंत) प्रतिष्ठित हैं। जो हमे प्रत्येक ऋतु का आनंद प्रदान करती हैं। हमारी इस मातृभूमि में सागर, महासागर नदी, नाहर, झीले, तालाब, कुएं इत्यादि जल साधन है जिससे सब प्रकार के अन्न, फल तथा शाक आदि अत्यधिक मात्रा में पैदा होते हैं जिससे सभी प्राणी सुखी रहते हैं। इससे हमें श्रेष्ठ भोग्य पदार्थ और एश्वर्य प्राप्त होता है। पृथिवी सूक्त में उल्लेख है कि जिस भूमि में वृक्ष वनस्पति और लता आदि स्थिर रहते हैं, जो वृक्ष औषधि रूप में सबकी सेवा संपन्न करती हैं, ऐसी वनस्पति धारिणी और सर्वपालनकर्त्री धरती की हम शीश झुकाकर स्तुति करते हैं अर्थात् हम पर्यावरण के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिनसे हमे अपनी प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति होती है।

यस्यां वृक्षा वानस्पत्या ध्रुवास्तिष्ठन्ति विश्वहा।
पृथ्वीं विश्वधायसं धृतामच्छावदामसि ।।

भूमि में धान, गेहूं, जौ आदि खाद्य पदार्थ प्रचुर मात्रा में होते हैं, वहां पाँच प्रकार के लोग (विद्वान, शूरवीर, व्यापारी, शिल्पकार तथा सेवक) आनंदपूर्वक निवास करते हैं। पर्यावरण हमें हमारी शुद्धता के लिए स्वच्छ जल प्रवाहित करता है। पृथ्वी मे हिमाच्छादित पर्वत और वन हमारे लिए सुखदाय होते हैं जो हमे स्वच्छ जल,हवा,फल,ओषधियां प्रदान करती है। जो हमे स्वस्थ रखने में सहायक होता हैं। पृथिवी की स्तुति करते हुए कहते हैं कि प्रथिवी सभी जीवों का पोषण करने वाली. संपदाओं की खान, सबको प्रतिष्ठित करने वाली स्वर्णिम वक्ष वाली जगत (सभी प्राणियों) का निवेश करने वाली, वैश्वानर (प्राणाग्नि) का भरण पोषण करने वाली यह भूमि अग्रणी, बलशाली इंद्रदेव तथा हम सबको अनेक प्रकार के धन को धारण कराने वाली हो।

विश्वम्भरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी।
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिन्द्रऋषभा द्रविणे नो दधातु ।।

सभी तरफ हरियाली और पेड़ पौधों के कारण हमे दाएं अथवा बाएं पैर से चलते-फिरते, बैठे या खड़े होने की स्थिति में कभी दुखी नहीं होना पड़ता। आपकी पूर्व तथा पश्चिम आदि चारों दिशाओं. चारों उपदिशाओं तथा नीचे और ऊपर की दिशाओं में सभी लोग सुखपूर्वक विचरण करते हैं। पर्यावरण से जो हमें ओषधियां तथा कंद आदि प्राप्त होती हैं वह हमारे लिए उपयोगी होती है। हमे श्रेष्ठ सुगंधित औषधियों और वनस्पतियां प्राप्त होती हैं। स्तुति करते हुए ऋषि कहते हैं की हमारी जिस भूमि में उद्यमी और शिल्पकला में निपुण, कृषि कार्य करने वाले हुए हैं, जिस भूमि में चार दिशाएं और चार विदिशाए धान, गेहूं इत्यादि पैदा करती है, जो विभिन्न प्रकार से प्राणधारियों और वृक्ष वनस्पतियाँ का पालन पोषण और संरक्षण करती है, वह मातृभूमि हमे गौ आदि पशु और अन्नादि प्रदान करने वाली हो

यस्याश्चतस्र प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नम् कृष्टयः संबभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमि गोष्वप्यन्ने दधातु ।।

जिस प्रकार माता अपने पुत्र को दुग्धपान कराकर उसका पोषण करती हैं उसी प्रकार हम पृथ्वी से औषधियां, वनस्पतियां आदि खाद्य पदार्थों से हमारा पोषण करें। पृथिवी के मध्य भाग और औषधियों में अग्नि तत्व विद्यमान है। जल (मेघ) विद्युत (अग्नि), पत्थरी (चकमक इत्यादि), मनुष्यों,गौओ,घोड़ों जादि पशुओं सभी में भी (जठराग्नि रूप में) अग्मि तत्व की उपस्थित है। हम मनुष्य भूमि से श्रेष्ठ अन्न और जल से जीवन धारण करते हैं, वह भूमि हमें प्राण और आयु प्रदान करती हैं। इस शुद्ध पर्यावरण से हमे पुष्टि एवम् बल प्राप्त होता है। यह पर्यावरण हमारे लिए शांतिप्रद,सुगंधितसंपन्न सुखदायी अन्न देने वाली, पायस्वति मातृभूमि हमें उपभोग्य सामग्री और ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हो। ऋषि स्तुती करते हुए कहते हैं कि देवगणों द्वारा रचित हिंसक पशु पृथिवी के जिस क्षेत्र में विभिन्न क्रीडा संपन्न करते हैं, जो संपूर्ण विश्व को स्वयं में धारण किए हैं, उस पृथिवी की प्रत्येक दिशा को प्रजापति हमारे लिए सौंदर्य संपन्न बनाए।
इस सूक्त में पर्यावरण को और पृथिवी को कोई हानि न पहुंचाने की प्रार्थना की गई हैं

यत् ते भूमे विखनामि श्रिपं तदपि रोहतु।
मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम् ।।

अर्थात् हे धरती माता। जब हम (औषधियां तथा कंद आदि निकालने अथवा बीज बोने के लिए) आपको खोदे, तो वे वस्तुएं शीघ्र उगे बढ़े। अनुसंधान के क्रम में हमारे द्वारा आपके मर्म स्थलों को अथवा हृदय को हानि न पहुंचे। इस प्रकार पर्यावरण के घटकों के विषय में उनके सरंक्षण हेतु उन्हें दैविक रूप प्रदान कर पृथिवी सूक्त में विशेष रूप से चिंतन किया गया है। पर्यावरण के प्रत्येक तत्व को देव आदि रूप में सम्मान देकर इन प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग मानव को आभार के भाव से करना चाहिए न कि अधिकार भाव से ऐसी शिक्षा अथर्ववेद में जन मानस को दी गई। समस्त प्राणी जगत का आधार एवं आश्रय स्थल पृथ्वी ही है वेदों में भूमि को माता के समान वंदनीय माना गया है भूमि को और अधिक को अन्न देने वाला शस्य संपदा को धारण करने वाली मूल धातुओं की खान माना गया है अतः इसे संरक्षित करना चाहिए।अथर्ववेद में वर्णित है कि पृथ्वी के जिस भाग को खोदा गया हो उसे तुरंत भर देना चाहिए पृथ्वी के हृदय स्थल को कभी भी क्षति नहीं पहुंचानी चाहिए। आज देश पर्याकरण में दूषित हो रहा है उससे कर्म में असंतुलन उपस्थित हो गया है इससे बचने के

लिए पृथिवी सूक्त प्रतिपादित सात्विक भाव को अपनाना पड़ेगा।पर्यावरण को स्वच्छ सुंदर रखने का आग्रह सिर्फ भावनात्मक स्तर पर किया गया हो ऐसी बात नहीं है वैज्ञानिक अनुसंधान सन्दर्भ में भी सात्विक भाव से अनुप्राणित होकर गहरे मानवीय संबंधों की स्थापना पर पर्याप्त बल दिया गया है वेदों का स्पष्ट निर्देश है कि लोग प्रकृति के प्रति सदा पूर्ण श्रद्धा भाव रखे और आनंद में जीवन व्यतीत करने के लिए उससे पर्यावरण की अनुकूलता प्राप्त करते रहे शुक्ल यजुर्वेद में स्पष्ट संदेश दिया गया है पवन मधुर सरस शुद्ध तथा गतिशील रहे सागर मधुर वषर्ण करें ओज प्रदान करने अन्न आदि वस्तुओं के बाद मधु के समान सुकोमल वन जाएं रात के साथ दिन भी मधुर रहे पृथ्वी की धूल से लेकर अंतरिक्ष सब कुछ मधुर हो न केवल जीवित मनुष्यों का अपितु पितरों का जीवन मधुमह में रहे सूर्य मधु में रहेगा गाय मधुर दूध देने वाली हो निखिल ब्रहमांड मधु में रहे प्रकृति के संरक्षण, सजीवता, एकता और प्रेम के महत्व को समझने के लिए हमेशा वेद और पर्यावरण एक दूसरे के पूरक बने रहे।

उपसंहार

पर्यावरणीय जैविक एवं अजैविक घटको की सुरक्षा के प्रति चेतना के मूलस्त्रोत वेद है। पृथ्वी सूक्त में लोक कल्याण की कामना है। प्रकृति के प्रत्येक अंग में शान्ति की अभिव्यक्ति है। विश्व मंगल की बलवती इच्छा है,क्योकी प्रकृति सीधी सौम्य गौ तथा रूष्ट सिंहनी दोनों हैं। यदि उसके साथ सामंजस्य तथा सहयोग का व्यवहार किया गया तो अनंत काल तक अपने दुग्ध रूपी संपदाओं से हमारा पालन भीषण करेंगी, परन्तु शोषण तथा विदोहन की स्थिति में हमे मार डालने में उसे तनिक भी संकोच न होगा। अतएव ऋषियों ने वायु, जल, औषधियों तथा वनस्पतियाँ आदि पर्यावरणीय घटकों के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया है तथा इनमें आई अशुद्धता को दूर करते हुए प्रेरित किया जाए, जिसके द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

संदर्भ सूची:

1. ऋग्वेद १०/१२८/२
2. ऋग्वेद १०/१३७/३
3. ऋग्वेद २/१५/२
4. ऋग्वेद १०/१८/१०
5. ऋग्वेद ५/८४/१०
6. अथर्व १२/१/१२
7. अथर्व.१२/१/२७
8. अथर्व १२/१/६
9. अधर्व १२/१/४
10. तैत्ति. सं. ७/११५/१
11. अथर्व. १२/१/३५